भजन

तर्ज–जिस दिल में भरा था प्यार मेरा

जिस दिल में भरा था इश्क तेरा,वो दिल क्यूं माया से जोड़ दिया
जो नजर सदा सुख लेती थी, उस नजर को खेल में मोड़ दिया

1–आनंद अंग के हम अंग पिया, तेरी मस्ती में हम तो रहते थे
नई नई अदाओं से तुझको, हम रोज रिझाया करते थे
आनंद अंग का क्यूं मेरे पिया, इस झूठ से नाता जोड़ दिया

2– तेरी राहों पे चलते चलते, ये माया पछाड़ गिराती है
पर तेरी मेहर मेरे प्रीतम, तेरे पास मुझे ले आती है
इस तन से न क्या क्या गुनाह हुए, क्यूं न इस तन को छोड़ दिया

3– ओ पर्दा नशीं पर्दा ये हटा, पर्दे में जी घबराता है
अब धाम के हमको वो रंग दिखा, जिनके लिए जीया तरसता है
तेरी नजरों से जो पीते थे, उनको क्यूं प्यासा छोड़ दिया